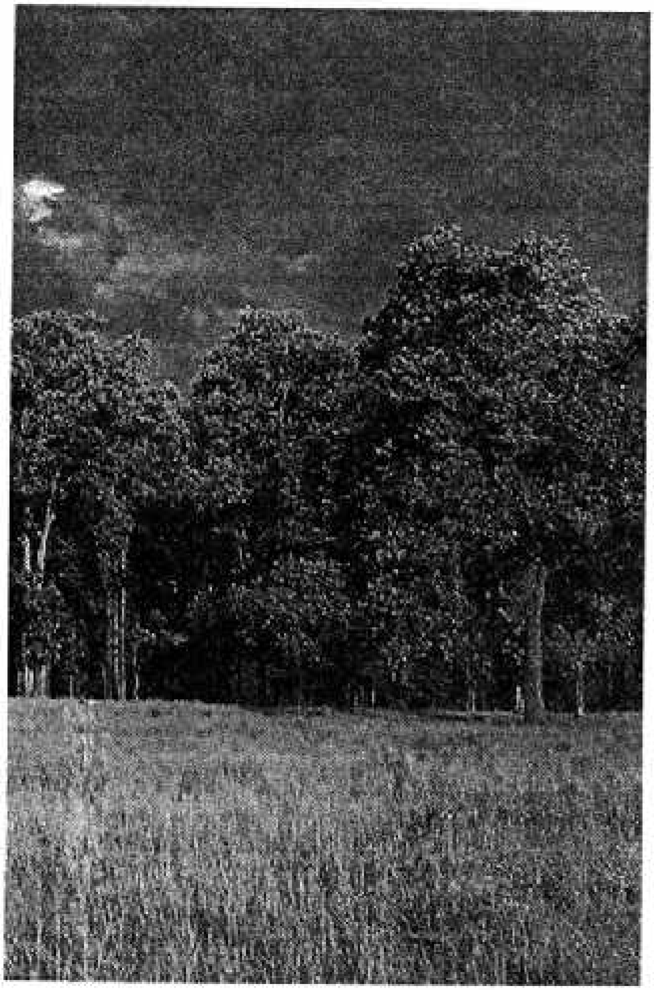

कान्हा के जंगल और मैदान

कान्हा

सतपुड़ा की पहाड़ियों के बारे में तुमने पढ़ा होगा और वहाँ के जंगलों के बारे में भी। इन पहाड़ियों के पास एक जगह के बारे में तुम्हें बताएँ। इस जगह का नाम है कान्हा।

ढूँढो ज़रा नक्शे में, कान्हा कहाँ है। मिला? भोपाल की किस दिशा में है? नर्मदा नदी की किस दिशा में हैं? किन पहाड़ियों के पास है?

कान्हा के पास के पहाड़ भी सतपुड़ा के ही हिस्से हैं पर इन्हें मैकल के नाम से जाना जाता है।

कान्हा एक बड़ा इलाका है। इसमें पहाड़ी हिस्से भी आते हैं और समतल ज़मीन भी। पहाड़ों पर तो जंगल है– जिनमें साल भी है, सागौन भी, बहुत सारा बाँस, जामुन, आँवला, तेंदू, अचार, सेमल, महुआ, पलाश, कौसम आदि भी। बाँस यहाँ की खासियत है। समतल ज़मीन में बड़ी–बड़ी घास के मैदान हैं।

इन जंगलों व मैदानों में तरह–तरह के जानवर रहते थे– मगर इनमें सबसे शानदार जानवर बाघ था। कान्हा के जंगलों में कई साल पहले तक सैकड़ों बाघ थे। इतने सारे बाघ किसी जंगल में तभी रह पाएँगे जब दूसरे जानवर और भी ज़्यादा हों जैसे– चीतल, गौर या जंगली भैंसा, सांभर, बारासिंगा, लंगूर आदि। आखिर ये सब ही तो बाघ के भोजन हैं। और ये सब दूसरे जानवर तभी पलेंगे जब वहाँ घना जंगल व घास रहे।

घास को ———— और ———— खाते हैं और उनको ———— जैसे मांसाहारी जानवर खाते हैं।

कान्हा का बाघ

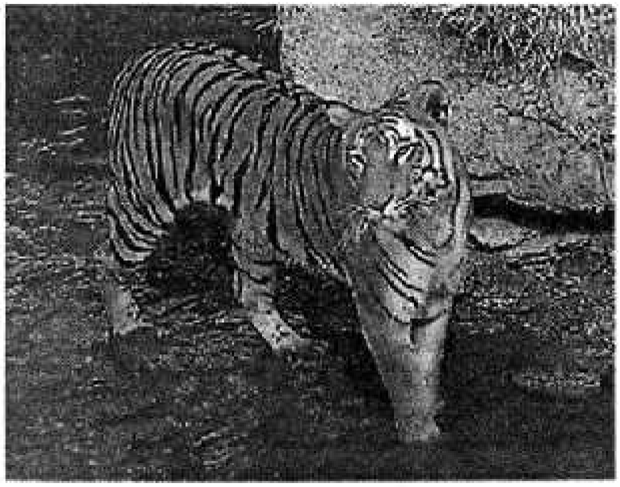

उस ज़माने में राजा महाराजा व अफसरों को शिकार खेलने का शौक था– वे एक दिन में बंदूक से सैकड़ों जानवर मार गिराते थे। वे लोग खासकर बाघों को मारते थे। एक बार एक शिकारी ने 30 बाघों को मार दिया।

धीरे–धीरे लोगों को यह समझ में आया कि शिकार से कितना नुकसान होता है और इसे बंद करना चाहिए। सरकार ने जंगलों में शिकार करने पर रोक लगा दी। सरकार ने यह भी तय किया कि ये जंगल केवल जानवरों के लिए सुरक्षित रहेगा। ताकि जानवर बिना किसी बाधा या डर के पल सकें। सरकार ने पूरे जंगल को अपने हाथ में ले लिया। कान्हा, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाने लगा राष्ट्रीय उद्यान पेड़ काटना, खेती करना या ढोर चराना मना है।

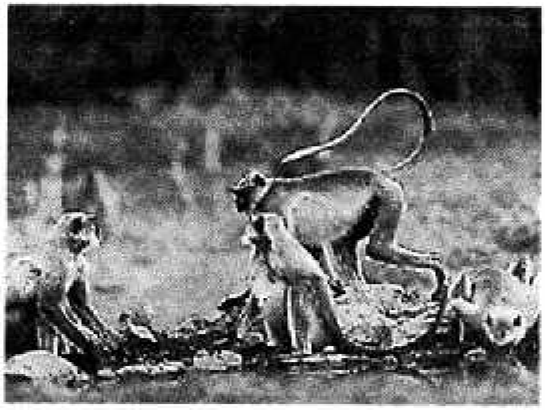

लंगूर

कान्हा के लोग दूसरी जगह में

कान्हा के गाँव वाले

कान्हा के जंगलों में कई गाँव सालों से बसे थे। इनमें बैगा आदिवासी रहते थे। ये लोग जंगल से शहद, जड़ी–बूटी, गोंद, साल के पेडों से रस, फल, फूल जमा करके बाज़ारों में ले जाकर अपनी जरूरत का सामान लाते थे। वहीं उनके खेत भी थे। वे पेड़ काटकर खेत तैयार करते थे। उनके गाय–ढोर भी इसी जंगल में ही चरने जाते थे। वे जलाने और अपने अन्य इस्तेमाल के लिए लकड़ी भी आम तौर पर पेड़ की डाली काटकर लेते थे। पर अपनी ज़रूरत से ज़्यादा लकड़ी नहीं काटते थे। सरकार ने सोचा कि इससे जंगलों को नुकसान होगा और जानवर आराम से नहीं रह पाएँगे। इस वजह से इन लोगों को कान्हा के इलाके के बाहर बसाया गया। कुछ गाँवों को तो अपनी जगह बदलनी पड़ी– नई जगह में फिर से घर बनाने पडे और खेत तैयार करने पड़े।

तुम्हें क्या लगता है–कान्हा के इलाके में जानवर कम होने का मुख्य कारण क्या था? शिकारियों का शिकार खेलना या बैगा लोगों का जंगल में रहना? तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

जंगल व जानवरों की देखभाल

इतने सारे जानवरों और इतने बडे जंगल की देखभाल करने के लिए कई लोग लगते हैं। इनके क्या–क्या काम होते हैं, चलो देखते हैं।

बारासिंगा

जानवरों की देखभाल

सबसे पहले तो यह ध्यान रखना पड़ता है कि चोरी–चुपके कोई शिकार न कर रहा हो। फिर यह देखना पडता है कि

पेड़ पर चढ़ता हुआ तेंदुआ

जानवरों के लिए, तालाबों, डबरों, नालों में साल भर पीने का पानी रहे। पानी के साथ जानवरों को नमक की भी ज़रूरत होती है। तो पानी के पास ही नमक के छोटे–छोटे टीले बना दिए जाते हैं।

जानवरों की लगातार गिनती रखी जाती है। कोई जानवर बीमार हो तो उसके लिए इलाज तो ज़रूरी है साथ ही यह ध्यान रखना कि बीमारी फैल तो नहीं रही। जानवरों के डॉक्टर भी वहीं रहते हैं और बीमार जानवरों की पहचान करना जानते हैं।

पेड़ों की देखभाल

पेड़ों को काटना तो यहाँ मना है। अगर जंगल में आग लग जाए तो काफी नुकसान हो जाता है। इसलिए जंगल विभाग के कर्मचारी थोड़ी–थोड़ी दूरी पर पेड़ काटकर ज़मीन से घास–फूस की सफाई कर देते हैं। बीच में खाली मैदानी पट्टी बना देते हैं। यदि एक तरफ पेड़ों में आग लगी भी तो पट्टी पर आकर रुक जाएगी, आगे नहीं फैलेगी। पेड़ों में कीड़े न लगें और कहीं लगें तो वे और पेड़ों में न फैलें इन बातों का भी ध्यान रखा जाता है।

यहाँ के जानवरों को देखने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। हाथियों पर जंगल घूमने का इंतज़ाम करना, उन्हें जंगल के बारे में फिल्म दिखाना, पेड़–पौधों के बारे में जानकारी देना, यह सब भी वहाँ के लोगों के काम हैं। कभी मौका मिले तो तुम कान्हा जाकर देखना। बाघ से मुलाकात हो जाए तो?

जंगल में आग लगे तो फैले नहीं इसके लिए क्या किया जाता है
तुम्हारे आसपास के जंगल में भी आग लगी होगी। कैसे लगी? इसका पता करो?
उसे बुझाने और फैलने से रोकने के क्या तरीके अपनाए जाते हैं। पता करो और लिखो।

बाघ

पीला–भूरा सा शरीर उस पर काली धारियाँ – ऐसा दिखता है यह बाघ। तुमने किताबों में चित्र तो देखे होंगे। नहीं, तो ढूँढना या अपने गुरूजी से कहना कि वे इसका चित्र दिखाएँ और शेर के बारे में तुम्हें कहानियाँ सुनाएँ।

बहुत शक्तिशाली जानवर होता है बाघ। उसको रहने के लिए ऐसी जगह चाहिए जहाँ लंबी–लंबी घास या बाँस के मैदान हों, जहाँ वह छुप सके, आराम कर सके, पीने का पानी और मारकर खाने के लिए जानवर मिलें। इतना मिल जाए तो बाघ खुश है।

बाघ का नाम सुनकर डर लगता है क्या? लोग इसके नाम से डरते हैं पर बाघ बहुत ही शर्मीला जानवर है और अकेला रहना पसंद करता है। वह खुद आदमी से डरता है। जंगल में आदमी दिख जाए तो वो चुपचाप वहाँ से खिसक लेता है।

शिकारी बाघ

बाघ को शिकार करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जिन जानवरों को वो खाता है आखिर वो भी तो बचने के तरीके जानते हैं। एक तो सांभर, चीतल, नील गाय सभी की नाक बड़ी तेज़ होती है। आँख और कान भी हमेशा खुले रहते हैं। ज़्यादातर ये जानवर झुण्ड में रहते हैं, तो संकट में कोई अकेला नहीं पड़ता। इस झुण्ड के जो नेता होते हैं, वे लगातार अपनी नाक हवा की दिशा में और कान खड़े रखते हैं। बाघ की गंध आते ही वे सबको इशारा कर देते हैं और झुंड के सारे जानवर फटाफट भाग लेते हैं।

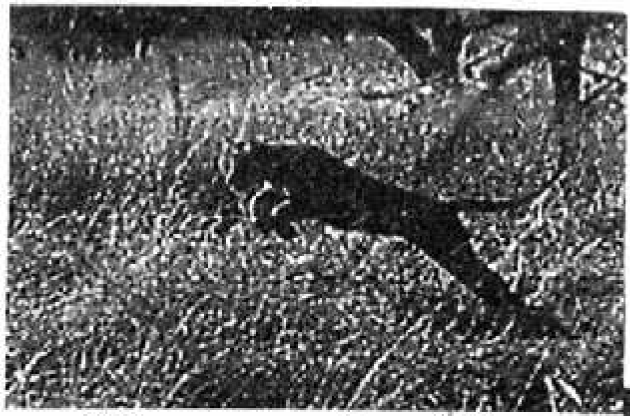

फिर बाघ भी उनके पीछे दौड़ लगाता है। जो जानवर पीछे रह जाय वही बाघ के हाथ आ जाता है। जब बाघ छिपकर शिकार करता है तो यह भी कोशिश करता है कि दूसरे जानवरों को उसके होने का पता न चले। वह ऐसी दिशा से जानवर की ओर बढ़ता है कि हवा जानवर से उसकी दिशा में बह रही हो ताकि जानवरों को उसकी गंध न मिल पाए। वह दबे पाँव, धीरे–धीरे, लगभग खिसकता हुआ जानवर के पास तक पहुँच जाता है। फिर मौका देखते ही अचानक, बिजली की तेज़ी से छलाँग लगाकर जानवर पर हमला करता है। जानवर को एहसास तक नहीं हो पाता। कुछ ही देर में जानवर मर जाता है।

दौड़ता हुआ शिकारी बाघ

बाघ और बाघिन दोनों ही शिकार करते हैं। दोनों इतने ताकतवर होते हैं कि अपने से कई गुना भारी जानवर को मारकर घसीटते हुए ऐसी जगह ले जाते हैं जहाँ उनके बच्चे हों, और जहाँ जानवर को छुपाकर कुछ दिनों तक रख सकें। इसे पूरा परिवार कई दिनों तक खाता है – फिर छोड़कर आगे बढ़ जाता है। बचे हुए माँस को दूसरे जानवर, चील आदि खाकर खत्म कर देते हैं।

बाघ को शेर भी कहते हैं लेकिन यह बब्बर शेर या सिंह से अलग है।

बाघ अगर घास–फूंस पौधे खाता तो भी क्या उससे डर लगता?

बाघ से बचने के लिए बाकी जावनर क्या तरीके अपनाते हैं?

बाघ किसी जानवर को कैसे शिकार करके मारता होगा इसका विवरण अपने शब्दों में लिखो। चित्र भी बनाओ।

शेरनी और बच्चे

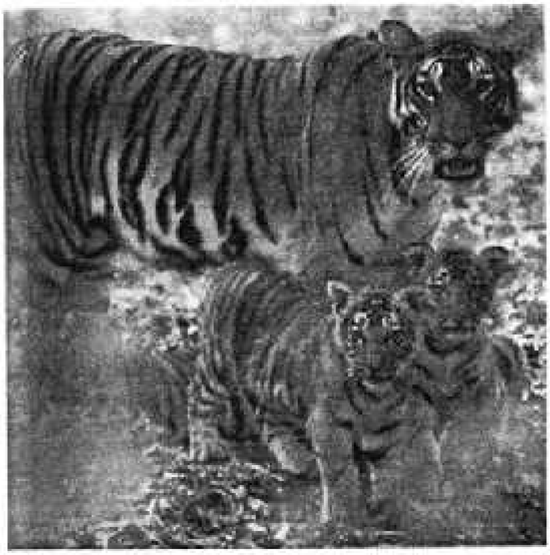

माँ, बच्चों के साथ

शेरनी के एक बार में 4–6 बच्चे होते हैं। उनकी आँखें बंद होती हैं। वे खुद कुछ भी नहीं कर सकते। शेरनी उनकी पूरी देखभाल करती है। तीन महीने तक उनके लिए खाना लाती है, उन्हें तरह–तरह की जरूरी बातें सिखाती है। जैसे, अलग–अलग तरह की आवाज़ें पहचानना। फिर उन्हें शिकार करना सिखाती है। पहले झपट्टा मारना– वे माँ की पूँछ को झपट्टा मारकर पकड़ने की कोशिश करते हैं– और माँ बार–बार उसे इधर–उधर खिसकाती रहती है। खुद छुप जाती है और उसे ढूँढते हुए बच्चे शिकार का पीछा करना सीखते हैं। डेढ़ से ढाई साल की उम्र तक बच्चे माँ के साथ ही घूमते–फिरते हैं फिर उन्हें अपनी जगह से बाहर भेज दिया जाता है और वो अकेले खाना–पीना–जीना सीखते हैं।

कान्हा के बाघ के बच्चे – एक अनुभव

कान्हा में बंसी नाम का एक आदमी काम करता था। उसे शेरों की अच्छी पहचान थी और शेरों से सामना उसके लिए रोज़ की बात थी।

जून की गर्मी के दिन थे बंसी का काम था कि वह ध्यान रखे कि सभी तालाबों में जानवरों के लिए पानी रहे। एक जगह एक बड़ा पलाश का पेड़ एक छोटे तालाब के ऊपर झुका हुआ था। बंसी इस पर चढ़ा और झाँक कर पानी में देखने लगा। नीचे देखा तो शेर की दो आँखें उसे ही देख रही थीं। एक शेर का बच्चा पानी की ठण्डक ले रहा था। बंसी को देखकर वो एक झटके में पानी से उछलकर किनारे पर चढ़कर उसके पीछे लग गया।

बंसी को और कुछ सूझा नहीं, वो पलाश के पेड़ पर ही ऊपर चढ़ गया। शेर पेड़ के नीचे आया। बंसी और ऊपर खिसक गया। शेर ने फिर पेड़ पर वार किया। बंसी भी आगे बढ़ गया। तभी एक और शेर के गुर्राने की आवाज़ आई। उसी तालाब से कुछ दूर एक शेरनी दो और बच्चों के साथ पानी में बैठी थी। बंसी की जान सूख गई,"भगवान, बचा लो मुझे" वह बुदबुदाता रहा।"

शेरनी तो अपने बच्चे को आवाज दे रही थी। पर बच्चा उसकी सुनने को तैयार नहीं था। शेरनी ने दो–तीन बार आवाज़ लगाई। जब वह नहीं माना तो वो उठकर पानी से बाहर निकली और बंसी के पेड़ के नीचे आई। एक बार और कस के गुर्राई मानो अपने बच्चे को डाँट लगा रही हो। बच्चे को भी शायद समझ में आ गया कि अब खेल खत्म हो गया। तो माँ की बात मानकर वो चुपचाप उसके पीछे चल दिया। पूरा परिवार जंगल में गायब हो गया।

बंसी के साथ जो घटा उसपर अपने मन से चित्र बनाओ।

कहते हैं कि बच्चों के साथ जो शेरनी होती है वह ज़्यादा खूँखार और खतरनाक होती है। तुम इसके कारण सोच सकते हो?

इस पाठ में तुमने कौन–कौन से जानवर के चित्र देखे? चित्र में वे क्या–क्या कर रहे थे?

राष्ट्रीय उद्यान और सामान्य जंगल में तुम्हारी समझ से क्या फर्क होते होंगे।